International Referred Research Journal, March, 2011.ISSN- 0974-2832,RNI-RAJBIL2009/29954, VoL.II *ISSUE-26

शोध पत्र- हिन्दी

March, 2011

केशवदास का प्रकृति चित्रण

* डॉ. संजीव खैमरिया

* अतिथि व्याख्याता हिन्दी, शा. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी म.प्र.

रीतिकाल के प्रवर्तक माने जाने वाले कवि एवं आचार्य केशवदास को साहित्य में हृदयहीन कवि या चमत्कार के फेर में पड़े शब्द जादूगर के रूप में माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने तो उनकी कितनी ही कमियों को गिनाते हुए लिख है कि :–

1'' प्रकृति के नाना रूपों के साथ केशव के हृदय का सामंजस्य कुछ भी नहीं था। अपनी इस मनोवृत्ति का आभास उन्होंने यह कहकर कि–देखे मुख भावै अनदेखेई कमलचंद ,ताते मुख मुखै सही कमलौ न चंद री'' साफ देदिया है; ऐसे कवि से प्रकृति केसच्चे वर्णन की आशा भी कैसे की जा सकती है''!

डॉ. श्यामसुंदरदास भी लिखते हैं कि 2''प्रकृति के अतुलित सौंदर्य से प्रभावित होने के लिए जिस भावुकता की आवश्यकता होती है उसका केशव में सर्वथा अभाव है।''2 परंतु केशवदास की रचनाओं का अध्ययन करने के बाद उन्हें प्रकृति चित्रण में सर्वथा असफल कहना अनुचित हैं। वस्तुतः केशवदास का प्रकृति चित्रण एक काव्य परंपरा से पृथक एक मौलिक पद्धति का है जिसमें उनकी अलंकारप्रियता के कारण दुरूहता अवश्य आ गई है परंतु उसकी रमणीयता समाप्त नहीं हुई है।विश्वामित्र के आश्रम के

lehiorh ou dk o.ku djrs gq, os fy[krs gS%&

3''तरु तालीस तमाल ताल हिंताल मनोहर , मंजुल वंजुल तिलकल कुच नारिकेर वर। एला ललित लवंग संग पुंगीफल सोहै , सारो सुक कुल कलित चित कोकिल अल मोहै। सुभ राजहंस कलहंस कुल नाचत मत्त मयूरगन,अति प्रफुल्लित फलित केशवदास विचित्रवन''3

इस प्रकार के वर्णनों में कवि काध्यान प्रकृति की रमणीयता को प्रस्तुत करने के बजाय अप्रस्तुत को वर्णित करने की ओर गया है जैसेः–

Qsyu dh lHkk xsn ubZA
lf?k lph tuq Mkfj nbZAA
niZu gks lfl Jhjfr dks]vkl u dke egh ifr dks A
Qsu fdèkksa!uofl/kq yls]nsounh ty gslclsA

यहां चंद्रमा के विभिन्न उपमान तोहैं, किंतु उसकी मोहक सुंदरता नहीं है।यह ध्यान देने का विषय है कि केशव ने प्रकृति का हर बार इसी तरह अप्रस्तुत वर्णन करने का प्रयास क्यों किया इसका अर्थ है केशव ने प्रकृति चित्रण को एक भिन्न दृष्टि से ही लिया है और ऐसा वर्णन जानकर ही किया है।

प्रकृति चित्रण करते समय कवि दो स्थितियों से गुजर सकता है, प्रथम में वह प्रकृति की सुंदरता को व्यक्त करने के लिए विभिन्न वर्णन करता है;दूसरे में वह उस दृश्य की प्रतिक्रिया से उत्पन्न मनोभावों की अभिव्यक्ति करता है। केशव का प्रकृति चित्रण दूसरे तरह का ही है। इसीलिए ऋतु वर्णन करते समय उन्हें वर्षा से उत्पन्न हरियाली की बजाय बर्षा काकालिका स्वरुप नजर आता है। बसंत को शिव के रुप में,ग्रीष्म को शबर समूह के रुप में ,हेमंत को विमुख प्रियतम की प्रिया के रुप मेंऔर शिशिर को नारी के रुप में उन्होंनेदेखा है। यहांउन्होंने प्रकृति की सुषमा भर कोही नहीं देखा है अपितु उस संपूर्ण क्षण का उनके मन पर जो सर्वप्रथम प्रभाव पड़ा वही प्रस्तुत किया है।इस आधार पर उनके प्रकृति चित्रण को असफल नहीं कहा जा सकता है।

fi;k ds fojg esa jke dh voLFkk dk fp=.k nf[k;s%&

4''हिमांशु सूरसी लगै सो बात वज्र सी बहैं,।दिशा जगै कृसानु ज्यों विलेप अंग को दहै।।

विसेज कालराति सों कराल राति मानिये,वियोग सीय को न काल लोक हार जानिये।।''4

इसी तरह राधा–कृष्ण के मान–मोचन का बड़ा ही सुंदर वर्णन उन्होंने किया हैः–

?kuu dh ?kksj lqfu ekju dh lksj lqfu] lqfu lqfu
ds'ko vIky vyhtu dks A
nkfeuh dh ned nsf[k nhi dks fnifr nsf[k]lq[k lst
nsf[k nsf[k lqnj lqou dksAA

कुंकुम की वास घनसार की सुवास भयो, फूलन की वास मन फूलि के मिलन को।

gfl gfl cksys nkm vugh euk;k
eku NfV x;ks ,d ckfj jkf/kdk jeu dksAA

यहां पर भी केशव ने प्रकृति चित्रण की बजाय उसके प्रभाव चित्रण को ही प्रधानता दी है।

इसी के कारण केशव को अवधपुरी के महलों की पताका भी दंडधारिणी सन्यासिनियां लगती हैं–

5^^vfr lqnj vfr lk/k] fFkj u jgr iy vk/kA
ije rikse; ekfu]nqM /kkfjuh tkfuAA**5

केशव की प्रकृति केवल दूसरों पर ही प्रभाव नहीं जमाती,वह संवेदनात्मक रुप में भी प्रस्तुत होती है। राम लक्ष्मण सीता के वनगमन पर प्रकृति भी सुहागन हो गई हैः–

6^^rMkx uhj ghu rs lehj ghu ds lknksl iqMjhd >qM
HkkSj eqMyhu eqMghaA
reky oYyjh leSr lqf[k lqf[k ds jgs ckxQfy Qfy
ds leqy lqy [kM ghAA

fpr pdkjuh pdkj ekj ekjuh ler gl gfluh ldkfn lo c< A

tgh tgh fojke yr jke t rgh vud Hkkfr d vud Hkkx lk c<AA**[6]

प्रकृति के वर्णन में उन्होंने नवीन उपमानों का भी सृजन किया है ।वर्षामें इंद्रका सूर्यपर आक्रमण देखियेः–

?ku?kkj ?kj nlg fnfl Nk; A
e?kok tu lj t i pf< vk; A
vijk/k fcuk f{kfr d ru rk;A
fru ihM u ihfMr go mfB /kk;AA

राम के वन गमन पर सारा जन समूह भागीरथ के पीछे गंगा के समान पीछे पीछे चल रहा हैः–

7^^jke pyr lc ij pY;k]tg rg lfgr mNkgA
euk HkxhjFk iFk pY;k HkkxhjFkh iokgAA**[7]

तुलसी की भांति केशव की प्रकृति भी लोक शिक्षा देती है। जिस प्रकार चंद्रमा वारूणी पश्चिम दिशा की ओर जाता है तो अस्त हो जाता है वैसे ही ब्राह्मण वारूणी मदिरा की इच्छा करते ही Hk"V gk tkrk g%&

tgh ok:fu dh djh] jpd :fp f}t jktA
rgh fd;k Hkxor fcu lifr 'kkHkk lktAA

इस प्रकार केशवदास का प्रकृति चित्रण अन्य कवियों से भिन्न रहा है किंतु वे चित्रण करने में असफल हुए हैं यह कहना अनुचित है। जिस प्रकार शुक्ल जी कहते हैं कि प्रकृति के विविध रुपोंसे उनके हृदय का सामंजस्य नहीं था पूर्णतः अन्याय है। केशवदास ने प्रकृति का परंपरा से हटकर एकविशिष्ट रुपकात्मक प्रभाव प्रस्तुत किया है। यह पद्धति उनकी अपनी नवीन सर्जना जिसका कालांतर में बहुधा प्रयोग हुआ है। मुक्तिबोध की फैंटेसी विधा की अकथनीय और शब्दों में व्यक्त ना हो पाने वाली मनोभावनाओं को केशव की शैली के समकक्ष रखा जा सकता है। अतः केशव के प्रकृति चित्रण को साधारण रुप से देखकर उनकी पांडित्यपूर्ण छवि के कारण उन्हें हृदयहीन कवि कहकर प्रकृति चित्रण में असफल कहना अन्याय है। इस विवेचन के द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि केशव का प्रकृति चित्रण अनोखा एवं नवीन पद्धति का और विशिष्ट है।

संदर्भ ग्रंथ

1.हिंदी साहित्य का इतिहास–पृ.123–आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।प्रकाशन संस्थान ।2.हिंदी साहित्य पृ.255–डॉ.श्यामसुंदर दास। 3.–7. रामचंद्रिका–केशवदास